“किन्नर साहित्य के परिप्रेक्ष में ‘तीसरी ताली’ ”

डॉ ॰गीता संतोष यादव
एस॰एम॰आर॰के॰

बी॰के॰ए॰के॰महिला
महाविद्यालाय नाशिक
एसोसिएट मई २०२२

प्रदीप सौरभ किन्नर साहित्य पर लिखे जाने वाले रचनाकारों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं |इनके मुख्यतः अबतक दो महत्वपूर्ण बहुचर्चित उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं| पहला **“मुन्नी मोबाइल”** तथा दूसरा **“तीसरी ताली”** स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, पर काफी लेखन कार्य हिंदी साहित्य जगत में होता रहा है |किंतु, इक्कीसवीं सदी के दूसरे दशक से किन्नर विमर्श को ध्यान में रखकर लिखी गई रचनाओं को अधिकतर किन्नर साहित्य के अंतर्गत माना जाने लगा है |इसके अंतर्गत उपन्यास, कहानी, कविता ,आत्मकथा ,आदि विधाओं की महती भूमिका रही है। स्वयं किन्नरों द्वारा लिखी गई **लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी** की आत्मकथा “मैं हिजड़ा मै लक्ष्मी” और **मनोबी बंधोपाध्याय** की आत्मकथा “पुरूष तन में फंसा मेरा नारी म न” आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं। किन्नर साहित्य की उपन्यास विधा में निर्मला भुरडिया का “गुलाम मंडी” श्रपित किन्नर, तीसरी ताली , अस्तित्व, किन्नर कथा , दर्द न जाने कोई, हमसफर ,दरमियान, मैं पायल,जिंदगी फिफ्टी फिफ्टी ,मेरे होने में क्या बुराई है,मुन्नी मोबाईल,शिखंडी आदि महत्वपूर्ण रचनाएं हैं |किन्नर साहित्य की कहानी विधा में “दहलीज का दर्द”,”दास्तान ए किन्नर”, “हम भी इंसान हैं”, “इस जिंदगी के उस पार”, “थर्ड जेंडर अनुदित कहानियां ” “ख्वाहिशों के पैबंद”, “थर्ड जेंडर हिंदी कहानियां ”, “कथा और किन्नर”, “हमख्याल”, आदि महत्वपूर्ण हैं। इसके अलावा इस विषयों पर अब तक कई आलोचनात्मक पुस्तकें भी आ चुकी हैं। जैसे “लैंगिक विमर्श और यमदीप”, थर्ड जेंडर पर केंद्रित हिंदी का प्रथम उपन्यास यमदीप,हिंदी उपन्यास के आईने में

थर्ड जेंडर,"थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ किन्नर कथा " तीसरी दुनिया का सच ,किन्नर समाज संदर्भ तीसरी ताली,हिन्दी साहित्य में किन्नर जीवन ,तीसरी दुनिया का यथार्थ,भारतीय साहित्य और समाज में तृतीय लिंगी विमर्श, "दरमियान आधी हकीकत आधा फसाना" "अथ किन्नर कथा संवाद", "थर्ड जेंडर और जिंदगी फिफ्टी फिफ्टी" "थर्ड जेंडर अतीत और वर्तमान ", थर्ड जेंडर अतीत और वर्तमान भाग 1, "किन्नर साहित्य व्याप्त यातना एंव संघर्ष", "कविता संग्रह ,अस्तित्व और पहचान", "सिसकती दस्तान"' "पंखुड़ियां अंतरद्वंदो की", अधूरी देह, "जिंदगी की दास्तान" "थर्ड जेंडर विमर्श बंद गली से आगे", 'थर्ड जेंडर आत्मकथा एवं जीवन संघर्ष, थर्ड जेंडर साक्षात्कार के आईने में ,थर्ड जेंडर भाषा और वैज्ञानिक अनुभव आदि महत्वपूर्ण आलोचनात्मक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं|

तीसरी ताली उपन्यास की कथावस्तु एवं परिवेश में परत दर परत एक नई दुनिया का परिदृश्य उजागर होता है जो चूंकि एकदम नया, अकल्पनीय, सच्चाई से अवगत कराने वाली यह कृति थर्ड जेंडर के अतीत वर्तमान एवं भविष्य का दस्तावेज है |हमारा समाज स्त्री पुरुष से बना है |समाज को चलाने के लिए इनकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है,तो किन्नर क्या है? इतिहास या पुराणों का हवाला देते हुए मैं उनका यशोगान ना कर य ह कहूंगी कि,यदि इतिहास को स्रोत मानते हुए उनके पेशे और गुणों का विस्तार वर्तमान समय में किया जाए तो , यह समाज, समाज को चलाने वाले दो पहिए की गाड़ी में ग्रीस लगाने का काम करेगा। जिससे भारतीय समाज और सुंदर, सुशील और सुदृढ़ हो गा । देश की सुरक्षा, संस्कृति, समृद्धता में परिपक्वता आएगी |यह समाज **वसुधैव कुटुंबकम** की युक्ति को बखूबी तरीके से चरितार्थ कर पायेगा |

वर्तमान किन्नर समाज में अधिकता यह देखा जाता है कि इनकी शारीरिक बनावट, हाव-भाव, चाल- चलन और बोलने का अंदाज अलग होता है |शुभ अवसरों पर नाच -गाकर अपनी आजीविका चलाने वाले हिजड़ों को भी मांगना, चोरी करना, रिश्वतखोरी पसंद नहीं है। इनके अपने वसूल हैं नियम

है जीवन शैली है जिसमें अनेक विधान एवं अनुष्ठान हैं। इनके भी वार्षिक सम्मेलन होते हैं |इनके आपसी बने बनाए रिश्ते हैं , जिसमें मौसी ,काकी, बुआ इत्यादि संबंध आते हैं। "तीसरी ताली " उपन्यास में रचनाकार ने अनेक प्रसंगों, घटनाओं,पात्रों तथा परिस्थितियों के माध्यम से किन्नरों के जीवन की परतों को खोलने का प्रयास किया है | जिनमें उन्हें काफी हद तक सफलता प्राप्त हुई है| उपन्यास के प्रारंभ में ही संकेत है, " गौतम साहब लल्ला हुआ है और गर्मी में रजाई ओढ़ कर बैठे हैं | सुंदरी ने ताली बजाकर दरवाजा जोर से भडभड़ाया | सुंदरी की ताल में ताल मिलाते हुए बिंदिया बद्दुआ देते हुए कड़वाहट के साथ बोली हिजड़ों को शगुन नहीं दोगे तो लल्ला हिजडा निकलेगा |"(पेज ११)तब तक किसी को पता नहीं था कि गौतम साहब के घर हिज डा ही पैदा हुआ है और उन्होंने दरवाजा इसलिए नहीं खोला,क्योंकि हिजड़े उनके कलेजे के टुकड़े को लेकर ही मानेंगे | किसी परिवार में जब हिजड़े का जन्म होता है ,तो परिवार के लोग समाज के भय से ऐसी संतानों को हिजड़ों को सौंप देते हैं | "तीसरी ताली" के गौतम साहब और आनंदी आंटी इन्हीं प्रकार के अभिभावकों में आते हैं, जो अपने बच्चों को अपने साथ रखना चाहते हैं, पढ़ाना चाहते हैं, किंतु सामाजिक विसंगतियों के कारण वे अपना सपना पूरा नहीं कर पाते |**पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नालासोपारा** का बिन्नी भी महान गणितज्ञ बनना चाहता है ,उसकी बा भी उसे आगे पढ़ाना चाहती है किंतु, समाज के दक़ियानूसी विचारों के कारण मां- बेटे दोनों का सपना अधूरा ही रह जाता है| "तीसरी ताली"उपन्यास में हिजड़ों के कई परिवार और डेरे हैं |इनके माध्यम से प्रदीप जी ने समाज के अनछुए पहलुओं , अनुत्तरित प्रश्नों, पीड़ाओं,और संवेदनाओं का चित्रण तो किया है,उस नैसर्गिक प्रेम का भी बखूबी वर्णन किया है जिस पर किसी भी मनुष्य का हक है | उनको किसी स्कूल में दाखिला नहीं मिलता , समाज उन्हें स्वीकार नहीं करता। अभिशप्त हिजड़ा समाज दर-दर की ठोकरें खाकर भी हिंसक नहीं बनता |खीज और अपमान उनका संयम तोड़ते रहते हैं |उपन्यास के पात्र

गौतम साहब के माध्यम से लेखक कहीं ना कहीं यह इंगित करना चाहते हैं कि , समाज को इस बात की पहल करनी होगी कि , लोग ऐसे बच्चों का पालन -पोषण सामान्य बच्चों की ही तरह करें |समाज से उनकी सुरक्षा करें, उनके मनोविज्ञान को समझ कर उनके कठिन जीवन को सरल बनाने का प्रयास करें | वास्तव में गौतम साहब और आनंदी आं टी ने अपने किन्नर बचों के भविष्य को उज्जवल करने की जितनी कोशिश की उतना ही काबिले तारीफ है| कई लोग तो वास्तव में उतना भी नहीं कर पाते हैं।

"तीसरी ताली"उपन्यास में पात्रों एवं चरित्र की भरमार है| बेरोजगारी के कारण भी कई लड़के –लड़कियां किन्नर बनकर, बधाइयां वसूल रहे हैं | उपन्यास में हिजड़ों का जन्म संबंधी प्रसंग तो कम है किंतु,इसमें हिजड़ा बनने-बनाने की कई कहानियां हैं। कुछ पात्र तो स्वयं ही हिजड़ा बनने के लिए आतुर रहते हैं। ज्योति नामक युवक को स्वयं अपना भविष्य हिजड़ा समाज में ही उज्ज्वल दिखाई देता है , क्योंकि जीवन में वह इतना गरीब है कि, अपनी आजीविका और माता-पिता का पेट भरने के लिए वह सोनम गुरु के पास भी पहुंच जाता है ,और किन्नर बनाने का अनुरोध करता है ,वह किन्नर बनने पर आमादा हो जाता है |वह कहता है माना मैं मर्द हूं , लेकिन यह समाज मुझसे मर्द का काम लेने के लिए राजी नहीं है| मुझे इस समाज ने मादा की तरह किसी चीज में तब्दील कर दिया है |मैं मर्द रहूं, औरत रहूं या फिर हिजड़ा बन जाऊ इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा ,पेट की आग तो बड़े-बड़े को ना जाने क्या-क्या बना देती है। (पृ॰11)

इसी उपन्यास का एक पात्र गोपाल भी है |जो की किन्नर नरगिस का गिरिया है | गिरिया ऐसे आदमी को कहते हैं जो किसी किन्नर का पति हो | वह धोखाधड़ी से किन्नरों की गद्दी हड़पने का प्रयास करता है। "खाली इलाकों में बेरोजगार गरीब और कंजर जाति की लड़के-लड़कियां हिजड़ा बनकर,नाच-गाकर बधाईयां वसूल कर रहे थे। बेरोजगारों को इस धंधे से अच्छी कमाई हो रही थी। कई बार गोपाल ने ऐसे लोगों को अपनी गद्दी से जोड़ने की कोशिश की थी , लेकिन उन्होंने यह कहकर

मना कर दिया था कि वे हिजड़े नहीं हैं मजबूरी में हिजड़े बने हुए हैं। पढ़े लिखे हैं। नौकरी या दूसरा काम धंधा मिलने पर इस काम को छोड़ देंगे| (पृ109)इसके अलावा नवयुवकों का कुछ वर्ग ऐसा है जो रोजगार और आजीविका के साधन प्राप्त करने हेतु आजीवन स्वेक्षा से किन्नर बन जाना चाहते हैं। किन्नर बनने की रस्मों एवं पीड़ादायक प्रक्रिया को अपनाने में उन्हें तनिक भी हिचक नहीं होती। उनका मानना है कि थोड़े से दुख के बाद यदी जीवन सुचारू रूप से चलने लगेगा तो आजीवन किन्नर बनने में क्या बुराई है|' "जिस अंग का प्रयोग उन्होंने जीवन भर पेशाब करने जैसे निरर्थक काम के लिए इस्तेमाल किया अब उसके लिए उसका होना ना होना बेमानी है |ज्योति भी पेट की आग बुझाने के लिए अंतिम विकल्प के रूप में यही रास्ता अपनाता है |

'तीसरी ताली' पुस्तक में उसके किन्नर बनने की प्रक्रिया का उल्लेख है | -"खतना करने वाला एक्सपर्ट पहले से ही वहाँ मौजूद था। उसने ज्योति की पैंट खिसकाई और उसके पुरुषाग को एक ही झटके में हलाल कर दिया, रक्त का सोता बहने लगा घंटों खून बहता रहा| हिजड़ों में यह मान्यता है कि इस रक्त के बहने के साथ पुरुष का पुरुषसत्व बह जाता है और उसमें ना रीत्व के गुण आ जाते हैं | हिजड़ा बनने की प्रक्रिया तब तक पूरी नहीं होती जब तक हिज डा बनने वाला पुरुष एक सिल पर बैठकर जोर नहीं लगाता,वह तब तक सिल पर जोर लगाता है जब तक उसके गुदा भाग से रक्त नहीं निकलता |जब यह प्रक्रिया पूरी हो जाती है तो इस नए बने हिजड़े का पहला रजोधर्म (मेन्सेज) माना जाता है।(पेज 61-62) इसी प्रकार जैविक रूप से गुणसूत्रों की 23 जोड़ी यदि 'XX' है तो लड़की का जन्म होता है ,'XY' हो तो लड़के का जन्म होता है | जब लिंग निर्धारण मे प्रकृतिक रूप से कुछ गड़बड़ियाँ हो जाती हैं |जैसे-टर्नर सिंड्रोम तब यही 23वीं जोड़ी यदि 'XO' मे परिवर्तित हो जाये तो किन्नर की उत्तपत्ति होती है |इनकी मुख्यता चार शाखाएँ होती हैं | बुचरा ,नीलिमा,हंसा और मंसा

|बुचरा की शाखा मे पैदाइशी,नीलिमा की शाखा मे जबरन बनाए गए,मनसा की शाखा मे इच्छा से बने और हंसा में उन्हे जगह दी जाती है जो शारीरिक कमी के कारण किन्नर बनते हैं|

इस उपन्यास में पात्रों की भरमार है , सबकी अपनी -अपनी संवेदनाएं और भावनाएं हैं| लेखक ने हिजड़ों के जीवन से जुड़े अनेक प्रश्नों के माध्यम से उनकी पारंपरिक जीवन शैली में हुए बदलाव का भी वर्णन किया है |उन्होंने ऐसे हिजड़ों का जीवन सामने किया है , जिसमें अधिकांश वे हिजड़े हैं जिन्होंने अपने पुरुषागों का ऑपरेशन स्वेच्छा से कराकर हिजड़ावृत्ति स्वीकारी है। इनमे नाचने गाने वाला एक भी नहीं है , सारे के सारे जिस्मा नी धंधे में लगे हैं | उपन्यास में राजू चायवाला ऐसा ही किन्नर है जिसे किन्नरों की आजीविका बिलकुल पसंद नहीं है | नाचना गाना और भोंडा प्रदर्शन।। उसने एक एन॰जी॰ओ॰ भी बनाया है ,जिससे बहुत से लोग जुड़ चुके हैं|उसकी जिंदगी का नाट्य रूपांतरण भी दिखाया गया है |जिसके अंत में वह हाथ जोड़कर दर्शकों से कहता है – "हर बार की हार जीतने का जज्बा देती है। व तीसरी योनि के लोगों से अपील करता है कि उठो और समाज में अपना मुकाम बनाओ। अपना हक हासिल करो |हक भीख में नहीं मिलता उसके लिए संघर्ष करना पड़ता है। उपन्यास में पात्रों के साथ-साथ घटनाएं भी अधिक हैं जहां राजू हिजड़ा को नाच गाकर कमाना उचित नहीं लगता |वही डिंपल को कला मौसी द्वारा भीख मांगते देखना नहीं सुहाता | उसने कलामौसी को समझाते हुए कहती है- "अपने इलाके में नाच –गाकर पैसे कमा। भिखारियों की तरह सिग्नल पर क्या भीख मांगती है। अपने साथ हम सबकी इज्जत का भी कचरा करती हैं।(पेज 14)

उपयुक्त कथन से यह सिद्ध होता है कि किन्नरों को भीख मांग कर जीवन यापन करने की इजाजत उनका समाज नहीं देता। उनमें स्वाभिमान है आत्मरक्षा का भाव है। अपनी अस्मिता को बनाए रखने की इच्छा है। भगवान राम का कहा हुआ कथन उन्होंने अपने जीवन का मूल मंत्र मान लिया है | यहां पर एक चरित्र का उल्लेख आवश्यक है ,वह है गुवाहाटी की **मणि कलिता** का, जो जन्म से ही किन्नर है | स्कूल के बच्चों ने उसके गुप्तांगों की नुमाइश की और चिल्लाने लगे हिज डा S, हिज डा

ss,हिजड़ा sss, इससे आहत होकर मणि ने स्कूल छोड़ दिया और गुरु अनंत कुमार के स्कूल में कत्थक सीखकर गंधर्व महाविद्यालय में डायरेक्टर के पद पर नियुक्त हो गया। किन्नरों के कमाई के बारे में इस पुस्तक में कोई आंकड़ा नहीं दिया गया है , किंतु उनकी गद्दी की चर्चा अवश्य की गई है जहां अपार संपत्ति का संकलन है। जिसका स्वामित्व किसी मुखिया के हाथ में होता है |जो किन्नर हो यह आवश्यक होता है |गोपाल जब स्वयं स्वेच्छा से हिजड़ा बनकर इस संपत्ति को हथियाने की कोशिश करता है तो , अन्ना मौसी गोपाल की हत्या कर गद्दी को बचाती हैं |यह गद्दी चंदाबाई की थी जो उसके बाद नरगिस को मिलने वाली थी | नरगिस अपने गिरिया गोपाल से मिलकर चंदबाई की हत्या करवा देती है | चंदाबाई की गद्दी दिल्ली की सबसे बड़ी गद्दी मानी जाती है| इस पर नरगिस को बिठा कर गोपाल हर रोज तीस-चालीस हजार की कमाई करता था| चंदबाई इस गद्दी पर नरगिस ,नीलम और रीना में से किसी एक को बिठाना चाहती थी| गोपाल नारगिस से गद्दी हड़पने के लिए उसका भी खात्मा कराता है |किन्तु गद्दी को गोपाल से बचाने के लिए संत आशामाई के कहने पर बिरादरी की एक बैठक बुलाई गई – "अचल संपत्ति को लेकर तय हुआ कि अनाथालय और एक स्कूल खोला जाए चंदाबाई की याद में|"लेखक ने अद्भुत कल्पना शक्ति एवं सामाजिक जीवन के गहन अध्ययन को जोड़कर उपन्यास में तमाम ऐसे प्रसंग प्रस्तुत किए हैं जिनका औचित्य किन्नर जीवन के किसी न किसी पन्ने को खोलता है। किन्नरों के संघर्षों का ज्वलंत दस्तावेज़ है यह उपन्यास। किन्नरों की जिंदगी के अधिकांश चित्र यहां दिखाई देते हैं |

ऐसी ही एक कथा है मंजू और राजा की। काम की तलाश में भटकते राजा को डिंपल अपने डेरे में ले जाती है |जहां राजा की मुलाक़ात डिंपल की पालिता पुत्री मंजू से होती है,जो सुंदर है, युवती है। राजा और मंजू एक दूसरे के इतने करीब आ जाते हैं कि , दोनों एकाकार हो जाते हैं। मंजू गर्भवती हो जाती है, जिसके दंडस्वरूप डिंपल उसका गर्भपात तो करवाती है साथ मैं गर्भाशय भी निकलवा देती है|

इतना ही नहीं वह राजा के पुरुषंग को भी कटवा देती हैं | किन्नरों की बिरादरी में लड़कियों को किन्नर बनाने की मनाही है। किन्नरों की गुरू सन्त आशामाई कहती हैं -कुदरत से खिलवाड़ करने का किसी को हक नहीं है। अपने फायदे के लिए किसी को हिजड़ा बनाना पाप है |ऐसा करने पर हिजड़े को सौ बार हिजड़े का जन्म लेना पड़ता है। फिर भी उसका पाप कम नहीं होता | डिंपल आशामाई के इस कथन से काँप जाती है। फिर भी वह मंजू के साथ इतना कठोर व्यवहार करती हैं। राजा भी डिंपल को जेल भिजवा देता है |अब वह राजा नहीं रानी बन चुका होता है। किंतु पुनः वही रोजगार की समस्या मुंह बाए खड़ी होती है और राजा अपनी रिपोर्ट वापस लेकर डिंपल को बरी करा देता है और उसके डेरे में ही रहने लगता है। परिस्थितियों का मारा मनुष्य राजा ना पुरुष ना स्त्री और मंजू अपना गर्भाशय खोकर आधी अधूरी औरत। समय बीतता जाता है| मंजू और राजा से रानी बनी राजा , एकदूसरे से कतराने लगते हैं |इसी दरमियान मंजू के जीवन में एक नया मोड़ आता है। बेंगलुरु का फोटोग्राफर विजय जो एक शराब कंपनी के लिए क्लेंडर की सीरीज बना रहा था , जिसकी थीम थी हिजड़े| उसकी मुलाक़ात मंजू से होती है | विजय और मंजू फोटोग्राफी के लिए अक्सर मिलने लगे | इसी सिलसिले में विजय विनीत से विनीता ब ने किन्नर से भी मिलता है ,जो गौतम साहब का पुत्र था और गे वर्ल्ड पार्लर की स्वामिनी और पेज थ्री सेलिब्रिटी है| उसके पार्लर की धूम पूरे देश में फैली हैं। वह विजय को मुंबई के एक फैशन शो में ले जाती है। यहा पर लेखक ने मुंबई मे शो के बाद होने वाली कॉकटेल पार्टी का वर्डन बड़ी बेबाकी से किया है।

विनीता और विजय शराब पीकर एक दूसरे के साथ डांस करते हैं किंतु विजय सदैव एक दूरी बनाए रहता है |अंत में विनीता विजय को अपने कमरे में ले जाने की चेष्टा करती है ,तो वह कुछ समझ बात टाल देता। जिससे विनीता आहत होती है। मुंबई से दिल्ली लौट कर विजय मंजू के साथ शूटिंग के काम में जुट जाता है। कैलेंडर की शूटिंग के दौरान मंजू विजय को चाहने लगती है किंतु , उसकी स्त्री सुलभ आकांक्षा थी कि प्रेम का निवेदन विजय की ओर से ही आए। अपनी आशापूर्णा न होते देख वह

स्वयं ही विजय से कहती है , मंजू को आपसे मोहब्बत हो गई है विजय क्या आप मेरा साथ निभाएंगे ? विजय खामोश रह ता है। कोई नहीं जानता था कि वहां से रीते हांथ कौन लौटा विजय या मंजू। विजय भी अक्सर य ही सोच ता था किन्नरों की जमात में इतनी सुंदर , भाषिक दृस्टी से सुशील य ह किन्नर हो ही नहीं सकती। उसकी शारीरिक रचना डीलड़ौल किसी भी मायने से किन्नर होने की गवाही नहीं देते|

कुवगाम मेला जो की खास कर किन्नर समाज में होता है | जहां पर सभी किन्नर एक दिन के लिए आरा वन देवता से विवाह करके सुहागिन बनते हैं और दूसरे दिन मंगलसूत्र तोड़ने की परंपरा होती है| सभी अपना मंगलसूत्र तोड़ कर विधवा बनते हैं। वहां पर मंजू भी डिम्पल के बहुत आग्रह करने पर जाती है और मन ही मन विजय को अपना पति मान कर उसके नाम का मंगलसूत्र धारण करती है। किंतु दूसरे दिन वह पुरोहित जी से मंगलसूत्र कटवाने से इंकार कर विजय के होटल पहुंचती है। यह घटना समाचार चैनलों पर खास सुर्खियों में रहता है |विजय भी यह समाचार देख रहा होता है तभी मंजू वहाँ आती है और विजय से बताती है कि मेरा मंगलसूत्र, मेरा सिंदूर सिर्फ तुम्हारा है। मंदिर में मैंने इसे आरावन के लिए नहीं तुम्हारे नाम से धारण किया है| तुम मुंह से भले ना कहो पर मैं जानती हूं कि तुम मुझसे मोहब्बत करते हो , मैं हिजड़ी नहीं एक मुकम्मल औरत हूं | सिर्फ यही खता है मेरी कि , इस बिरादरी ने मुझे पाला-पोषा। मेरे गरीब मां बाप ने डिंपल के हाथों मुझे बेच दिया। इसमें मेरा क्या कसूर मैं जीना चाहती हूं, तुम्हारे साथ घर बसाना चाहती हूं|'(पृ१९३) चूँकि विजय स्वयं में एक किन्नर है,वह अन्य किन्नरों की भांति नाच -गा कर, ताली बजा , बधवा गाकर अपनी जीविका नहीं चलाना चाहता | वह रामद्वारा दिये गए वरदान कहे, या अभिशाप के मिथक को झुठलाना चाहता है। इसलिए वह फोटोग्राफी का व्यवसाय करता है | प्रकृति उसके साथ ऐसा क्रूर मज़ाक क्यों कर रही है इसपर वह क्षुब्द्ध भी है। इतने में उनके कमरे में विनीत से बनी विनीता भी आ जा ती है जो स्वयं विजय पर मोहित है तब उसके कानों में विजय के ये शब्द पढ़ते हैं-" मंजू मैं तुमसे शादी नहीं कर सकता मैं जानता

हूं तुम एक मुकम्मल औरत हो। तुम्हारी खूबसूरती हासिल करना किसी की भी खुशकिस्मती हो सकती है, पर मैं खुशकिस्मत नहीं हूं। मैं तुम्हारे निर्मल व पारदर्शी हृदय का समर्पण स्वीकार कर ही नहीं सकता। तुम मुकम्मल औरत जरूर हो , पर मैं मुकम्मल पुरुष नहीं हूं |मैं हिजड़ा हूं sहिजडाss हिजडाsss (पृ१९४)

प्रस्तुत पुस्तक में हिजड़ों के साथ -साथ अप्राकृतिक यौन संबंध पर भी लेखक ने पर्याप्त चिंतन लेखन किया है। क्वेर सिद्धांत की झलक भी य हं दिखती है |इसे मान्यता दिलाने के लिए समलैंगिक लोकसभायें कर रहे थे |तब जाकर कोर्ट ने धारा 377 को मान्यता दी| किंतु, न्यायालय के मान्यता देने से पूर्व बहुत से आंदोलन हुए | देश विदेश के लोगों ने समलैंगिक विवाह के पक्ष में दलीलें दी। अंत में 105 पन्नों का अपना फैसला सुनाते हुए जब जज ने स्थापित मान्यताओं से हटकर कहा कि समलैंगिकता को अपराध करार देने वाली धारा 377 मौलिक अधिकारों का हनन है ,मानवीय गरिमा के खिलाफ है , समानता के अधिकारों की गारंटी के खिलाफ है | इसलिए इस धारा को यहां अदालत अवैध घोषित करती है|उपन्यास मेँ वर्णित चाणक्यपुरी के डिस्कोथिक में मंगलवार को गे और गुरुवार को लेजबीन पार्टी हर सप्ताह होने लगी | (पेज127-128) | मुल्ला-मौलविओं, पंडित-पुजारियों फादर-पादरी, नेता अभिनेता सब ने इसका विरोध किया। लोगों को भारतीय संस्कृति और धर्म सम्मत यह नियम नहीं लग रहा था | किंतु ,समलैंगिक जोड़े के सुनील भाई , अनिल तथा यासमीन और जुलेखा ने कोर्ट के आदेश से शादियां कर ली थी। हिजड़ों और समलैंगिक स्त्रियों पुरुष के जीवन को पर्याप्त रूप से पाठकों के सामने रखते हुए प्रदीप सौरभ ने पुलिस के चरित्र को भी यथास्थान उजागर किया है। सामाजिक जीवन के अनछुए पहलुओं का स्पष्ट करते हुए प्रदीप जी की भाषा भावना के समानांतर बहती रहती है- गौतम साहब और विनीत से बनी विनीता का चित्रण प्रदीप जी ने निम्न प्रकार से किया है। "पिता ने आंखें बंद कर ली। सूखी आंखों में बची-खुची आंसू की बूंदे भी बह निकली | उस शाम का

सूरज विनीता के आंचल में समा जाने को आतुर था |रात हुई, तारों ने लोरी सुनाई, विनीता की आंखों में शबनम उतरी और तकिए को भिगोती रही देर तक। (पेज 120)

अस्तु कहा जा सकता है कि, तीसरी ताली उपन्यास में वर्णित किन्नर समाज तीसरा अभिशाप है समाज में| यदि इसे मुख्यधारा में लाना है तो सामाजिक स्तर पर कई सुधार लाने की आवश्यकता है |

१)सर्वप्रथम तो इनकी शिक्षा की व्यवस्था होनी नितांत आवश्यक है। जिससे इनमें भारतीय संस्कृति का बीजारोपण किया जा सके। क्योंकि जन्म से ही यदि इन्हें समाज से काट दिया जाता है ,या कटवा दिया जाता है तो इनके सभ्य आचरण की उम्मीद कैसे कर सकते हैं | जननी और विद्यामंदिर दोनों के अभाव में इनका जीवन नीरस अस्त-व्यस्त और संवेदनाशून्य हो जाता है। मेरा मानना है कि जिस प्रकार अंगुलिमाल को बुद्ध ने आत्मज्ञान दिया वह 'मरा मरा' से 'राम राम' कहने लगा उसी प्रकार यदि इस कौम को सही मार्गदर्शन मिला तो इनमे विभिन्न कलाओं के माध्यम से भारतीय लोक -कलाओं एवं संस्कृति को समृद्ध किया जा सकता है|

२)साहित्य के क्षेत्र में देखा जाए तो इनके द्वारा रची गई रचनाओं पर फिल्म बनाई जा सकती है जिसके माध्यम से इनके संघर्षों के माध्यम से आने वाली पीढ़ी और बाल किन्नर को प्रेरणा मिल सके |क्योंकि फिल्म जगत ही एक ऐसा माध्यम में जिस से बॉलीवुड से हॉलीवुड तक विचारों को तीव्रता से फिल्मांकन माध्यम से जन-जन तक पहुंचाया जा सकता है |

३)प्रथम ट्रांसजेंडर मनोबी बंदोपाध्याय जो की महिला कॉलेज की प्राचार्य है, इनकी आत्मकथा संघर्षों से भरी पड़ी है | इसे यदि समाज में फिल्मांकन के माध्यम से लाया जाए तो इस समाज को भी आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलेगी। फिल्म जगत में भी इनकी अलग पहचान स्थापित होगी |बहुतयता से देखा जाता है कि नाच -गाने के गुण इनमें अधिकतर पाए जाते हैं | गंधर्व महाविद्यालय के माध्यम से इनके

गुणों को और भी निखारा जा सकता है |एक ट्रांसजेंडर तो अपने गुणों के बल पर गंधर्व महाविद्यालय के डायरेक्टर पद तक पहुंच चुकी है|

४)कोविड महामारी के दौरान इ न लोगों को बड़ी दिक्कततो का सामना करना पड़ा | इसलिए आवश्यकता यह है कि भविष्य में इस समाज के लिए सभी अस्पताल में कम से कम दो बेड की सुविधा मुहैया कराई जाये| कहीं कहीं पर अस्पतालों में यह सुविधा है किन्तु , हाल ही में मैंने फेसबुक पर यह समाचार पढ़ा था कि अस्पताल-कर्मचा रियों ने मनोबी बंदोपाध्याय को आर-टी-पी-सी आर के लिए रोका | उनके साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया गया |इसमें सुधार की आवश्यकता है| क्योंकि सविधान ने भी उन्हें नागरिकता प्र दान की है , उनके आधार कार्ड है |नागरिकता प्रमाणपत्र है |यदि वोट बैंकों में उनके उपस्थिति आवश्यक है तो मूलभूत समस्याओं से क्यो दूर रखा जा रहा है|

५) किन्नर के मरने के बाद जो किवदंतियाँ सुनने में आ ती है कि उनकी शवयात्रा रात के अंधेरे में निकली जाती है|जूते चप्पल से पीटा जाता है उसका मैं खंडन करूंगी | इस पुस्तक में भी इस दृश्य का वर्णन है किन्तु अब स्थितियाँ ऐसी नहीं है | एक साक्षात्कार के माध्यम्म से मैंने यह जाना कि इनकी अंतिम बिदाई भी सम्मान से होती है |यदि परिवार वाले ले जाना चाहे तो इनके शव को ले जा सकते हैं,या फिर किन्नर समाज परिवार की उपस्थिती में इनका अंतिम संस्कार करता है |

६) बड़े-बड़े स्कूलों में जिस प्रकार **राइट टू एजुकेशन** के तहत गरीब बच्चों के लिए सीटें रिजर्व होती हैं ,उसी प्रकार किन्नर बच्चों के लिए भी सीट की आरक्षण रखा जाए जिससे स्कूलों में उनको दाखिला लेने के लिए जद्दोजहद न ही करनी पड़ेगी | उनके अभिभावकों को शर्मिंदगी का सामना भी नही करना पड़ेगा |एडमिशन के लिए दर-दर नही भटकना पड़ेगा ।महाविद्यालययों में माइग्रेटेड छात्रों के लिए दो सीट रिजर्व होती हैं इसी प्रकार ट्रांसजेंडर के लिए भी यह सुविधा उपलब्ध की जा नी चाहिए। ताकि

इनकी शिक्षा में कमी न रह जाये |जिस प्रकार लड़के-लड़कियों के लिए अलग शौचालय की व्यवस्थता होती है उसी प्रकार किन्नरों के लिए भी अलग से शौचालय की व्यवस्था हो |

७) स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद जिस प्रकार महिलाओं को शिक्षा के लिए महर्षी धोंडो केशव कर्वे जी ने एस॰एन॰डी॰टी॰ विश्वविद्यालय की स्थापना की थी उसी प्रकार इस समाज के लिए यदि एक अलग से विश्वविद्यालय की निर्मिती की जाए जिसमें खेलकूद , नृत्य संगीत , मैनेजमेंट, कृषि विज्ञान, अभियंत्रिकी आदि के अध्ययन -अध्यापन की सुविधा प्राप्त हो |जिससे भारतीय समाज की एकता अखंडता संप्रभुता की संकल्पना गौरवशाली रूप से साकार होगी | वैश्विक रूप में भारत की भारतीय शुक्रतारे के रूप में उदित होगी।क्यूंकि अब तक समाज के विकास का जो दायित्व महिला और पुरुष तक सिमटकर रह गया है ,उसमे किन्नर समाज भी अपने गुणों –कौशलों से उसे पल्लवित और उज्ज्वलित , करेगा | २१ वर्ष की उम्र में ही **जोइता मंडल** भारत देश के प्रथम ट्रांसजेंडर के रूप में पशिम बंगाल के इस्लामाबाद की अदालत में नियुक्ति हुई | उनका कहना है कि सरकार उन्हे एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में देखती है ना कि, ट्रांजेंडर के रूप में |

८)इसी प्रकार प्रिथीका याशिनी तमिलनाडु के धरमपुर में सब-इंस्पेक्टर के पोस्ट पर नियुक्त हुई हैं|उन्हें यहां तक पहुंचने के लिए हाईकोर्ट तक की लड़ाई लड़नी पड़ी थी | किंतु ऐसे लोग इतने हैं कि उन्हें उंगलियों पर ही गिना जा सकता है मुख्यधारा में लाने के लिए हमें, आपको और स्वयं किन्नर समाज को प्रयास करना पड़ेगा।

९) किन्नर समाज ही एक ऐसा समाज है जो कि,कभी यह नहीं चाहता की उसके समाज की वृद्धी हो| अर्थात कोई बच्चा किन्नर पैदा हो|अब सो चिये और विचार की जिये कि,जिनको अपनी वंश-वृद्धी नही करना है वो भ्रष्टाचार मुक्त होंगे और देश की उन्नती और प्रगती में अधिक सहायक होंगे|

अंत मे ,मैं बस इतना कहना चाहूंगी |कौशल्या बैसंत्री जी दलित स्त्री होना दोहरा अभिशाप कहती हैं, तो किन्नर होना यह तीसरा अभिशाप है मेरी दृष्टि में |किन्तु प्रकृति में शक्ति है ,इनकी उत्पती

इस समाज में हुई है जो प्रकृति की एक देन के रूप में ही है |जिस प्रकार विज्ञान वरदान और अभिशाप दोनों रूपों में हमारे बीच विद्यमान हैं उसी प्रकार इस तीसरे अभिशाप को भी वरदान में रूपांतरित किया जा सकता है |बस,आवश्यकता है एक उचित दिशा और मार्गदर्शन की | उचित गुरु और शिक्षक की| चाणक्य जी ने भी कहा है प्रलय और निर्माण दोनों शिक्षक के गोद में पलते हैं | इन्हे निपुण गुरु और मार्गदर्शक की आवश्यकता है ,बदलाव ११० प्रतिशत होगा ही |अक्सर यह देखा जाता है की जो बालक,बालिकाएँ सामान्य रूप से जन्म लेते हैं वो भी जरूरी नही है कि सबके सब ऊंचे ओहदे पर ही काम करे|अपनी क्षमता अनुसार सभी लोग अपनी भूमिका निभाते हैं|उसी प्रकार किन्नर बालकों को भी उचित परवरिश और मार्गदर्शन दिया जाए तो वे अपनी क्षमता अनुसार देश की भारतीयता को समृद्ध करने करने की लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे | क्यूंकि लैंगिक विकलांगता अलग चीज है उसका शारीरिक और बौद्धिक क्षमता से कुछ लेना-देना नही है|

"कौन कहता है आसमान में सुराख नही हो सकता |

एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों ||

संदर्भ :

1) तीसरी ताली : लेखक प्रदीप सौरभ : प्रकाशक: वाणी प्रकाशन ,4695,दरियागंज ,नई दिल्ली 110002 प्रथम संस्करण २०१८

2) कुईर विमर्श : वाणी प्रकाशन ४६९५ ,२१-ए,दरीयागंज,नई दिल्ली ११०००२ प्रथम संस्करण २०२१

3) थर्ड जेंडर तीसरी ताली का सच :संपादक : डॉ॰शगुफ्ता नियाज : विकास प्रकाशन कानपुर:प्रथम संस्करण २०१८

४)लैंगिक विमर्श एवं यामदीप :हर्षित द्विवेदी :अमन प्राकाशन :कानपूर :प्रथम संस्करण २०११

५)यमदीप : नीरजा माधव :सामायिक पेपरबैक :संस्करण २०२१